अभ्यास पत्रक

पाठ: 4 - हरिद्वार

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

---

1. निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही उत्तर चुनें। (5 अंक)

(i) लेखक ने हरिद्वार क्षेत्र में कितने मुख्य तीर्थ गिनाए हैं?

(क) तीन (ख) चार (ग) पाँच (घ) सात

(ii) कनखल तीर्थ में किस पौराणिक घटना का उल्लेख किया गया है?

(क) भगीरथ द्वारा गंगा को लाना (ख) शिव-पार्वती का विवाह

(ग) दक्ष का यज्ञ और सती का देह त्याग (घ) पांडवों का वनवास

(iii) लेखक को पत्थर पर किया गया भोजन किससे बढ़कर सुखदायक लगा?

(क) घर के भोजन से (ख) सोने की थाल के भोजन से

(ग) धर्मशाला के भोजन से (घ) मिठाई से

(iv) हरिद्वार की किस घास में से दालचीनी और जावित्री जैसी सुगंध आती है?

(क) दूब घास (ख) मूंज घास (ग) कुशा घास (घ) लेमन ग्रास

(v) लेखक हरिद्वार में किसके घर पर ठहरे थे?

(क) भारामल जैकृष्णदास खत्री (ख) राजा भगीरथ

(ग) अपने मित्र कल्लू जी (घ) दीवान कृपा राम

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें। (5 अंक)

(i) हरिद्वार के पंडे और दुकानदार कहाँ से आते हैं?

उत्तर- .....

(ii) लेखक ने हरिद्वार के पंडों को कैसा बताया है?

उत्तर- .....

(iii) लेखक ने अपने मित्र के साथ मिलकर ग्रहण के समय क्या किया?

उत्तर- .....

(iv) लेखक के अनुसार हरिद्वार में कौन-सी चीज अच्छी, महीन और उज्ज्वल बनती है?

उत्तर- .....

(v) लेखक पत्र के अंत में संपादक से क्या निवेदन करते हैं?

उत्तर- .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें। (3 x 2 = 6 अंक)

(i) लेखक ने गंगा तट पर भोजन करने के अपने अनुभव का वर्णन किस प्रकार किया है?

उत्तर- .....

.....

(ii) "मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ" - इस पंक्ति का क्या आशय है?

उत्तर- .....

.....

(iii) लेखक को हरिद्वार पहुँचते ही कैसा अनुभव हुआ?

उत्तर- .....

.....

4. निम्नलिखित दीर्घ उत्तरीय प्रश्न का उत्तर विस्तार से दें। (4 अंक)

(i) भारतेंदु हरिश्चंद्र ने इस यात्रा-वर्णन को लगभग 150 वर्ष पूर्व की हिंदी में लिखा है। पाठ के आधार पर बताइए कि उनकी भाषा-शैली की क्या विशेषताएँ हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

उत्तर कुंजी (वर्कशीट - 2)

1. बहुविकल्पीय प्रश्न: (i) (ग) पाँच
(ii) (ग) दक्ष का यज्ञ और सती का देह त्याग
(iii) (ख) सोने की थाल के भोजन से
(iv) (ग) कुशा घास
(v) (घ) दीवान कृपा राम

2. एक वाक्य में उत्तर: (i) हरिद्वार के पंडे और दुकानदार कनखल व ज्वालापुर से आते हैं।
(ii) लेखक ने हरिद्वार के पंडों को विलक्षण संतोषी बताया है, जो एक पैसे को लाख मान लेते हैं।
(iii) लेखक ने अपने मित्र के साथ मिलकर ग्रहण के समय आनंदपूर्वक स्नान किया और दिन में श्री भागवत का पारायण किया।
(iv) लेखक के अनुसार हरिद्वार में जनेऊ अच्छा, महीन और उज्ज्वल बनता है।
(v) लेखक पत्र के अंत में संपादक से निवेदन करते हैं कि वे इस पत्र को अपनी पत्रिका में स्थान (प्रकाशित) दें।

3. संक्षिप्त उत्तर: (i) लेखक ने बताया कि उन्होंने गंगा जी के तट पर स्वयं रसोई बनाई और पत्थर पर ही जल के बहुत निकट भोजन परोसा। ठंडे-ठंडे पानी के छींटे पास ही आ रहे थे और उस समय का भोजन उन्हें सोने की थाली में किए गए भोजन से भी अधिक सुखदायक लग रहा था।
(ii) इस पंक्ति का आशय है कि लेखक शारीरिक रूप से हरिद्वार से लौट आए हैं, लेकिन उनका मन और आत्मा अभी भी वहीं के शांत, पवित्र और आनंदमय वातावरण में डूबे हुए हैं। हरिद्वार की यात्रा का उन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा है कि वे मानसिक रूप से स्वयं को वहीं महसूस कर रहे हैं।
(iii) लेखक को हरिद्वार पहुँचते ही उनका मन अत्यंत प्रसन्न और निर्मल हो गया। उन्हें जो आनंद मिला, वह वर्णन से भी परे था। हरिद्वार की पुण्य भूमि में प्रवेश करते ही उनका मन शुद्ध हो गया।

4. दीर्घ उत्तरीय उत्तर: (i) भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लगभग 150 वर्ष पूर्व लिखी गई इस भाषा-शैली की कई विशेषताएँ हैं:

- **तत्सम शब्दों का प्रयोग:** भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों का बहुतायत से प्रयोग है, जैसे - चित्त, वल्ली, मनोरथों, त्रिभुवन पावनी, शिषर, कटितट, विलक्षण आदि।
- **चित्रात्मकता:** लेखक का वर्णन इतना सजीव है कि पढ़ते हुए आँखों के सामने दृश्य बन जाता है। उदाहरण के लिए, "बड़े-बड़े वृक्ष भी ऐसे खड़े हैं मानो एक पैर से खड़े तपस्या करते हैं"।
- **पुराने शब्दों का प्रयोग:** भाषा में आज के समय में अप्रचलित शब्दों का प्रयोग है, जैसे - 'जात्रियों' (यात्रियों के लिए), 'बिछायत' (बिछौना), 'हेतु' (के लिए), 'निदान' (अंततः)।
- **आदरसूचक भाषा:** सम्मानित संज्ञाओं के लिए आदर प्रकट करने वाले शब्द प्रयोग किए गए हैं, जैसे "श्री गंगा जी"।
- **पत्र की औपचारिक शैली:** पत्र की शुरुआत "श्रीमान कविवचन सुधा संपादक महामहिम मित्रवरेषु!" जैसे औपचारिक और आदरपूर्ण संबोधन से होती है। यह भाषा शैली आज की हिंदी से भिन्न होते हुए भी अपने प्रवाह और चित्रात्मकता के कारण बहुत प्रभावशाली है।